विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)

तृतीय वर्ष, सप्तम पत्र | डॉ० ओम प्रकाश आर्य
काव्यदीपिका - प्रथम शिखा, | महाराजा कॉलेज, आरा
काव्य लक्षण | दिनांक- 25।04।2020

इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदाऽऽवली (दण्डी)

इष्टाः - अलौकिकचमत्कारित्वेन सहृदय-मनोरमाः, अर्थाः, तैर्व्यच्छिन्ना - विलक्षणीकृता, पदाऽऽवली - पदसमूहः काव्यम्।

'रिपुस्ते मृतः' 'पुत्रस्ते जातः' इत्यादि-वाक्येन जनितस्य आनन्दस्य न लोकोत्तरत्व-मिति न तत्र काव्यत्वप्रसक्तिः। तथा च लोकोत्तरचमत्कारितया सहृदयहृदयाऽऽकर्षि वाक्यं काव्यमिति फलितम्। तन्नाम वाक्यं काव्यम् - यत् खलु विलक्षणचमत्कारितया बलादिव वशमानीय सामाजिकजनमनांसि रञ्जयति। यथा-

मानुषीषु कथं नु स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्॥4॥
(अभिज्ञानशाकुन्तल)

उद्गीर्णदर्भकवला मृगी परित्यक्तनर्तना मयूरी।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्ति अश्रु इव लताः॥5॥
(अभिज्ञानशाकुन्तल)

अयि कठोर! यशः किल ते प्रियम्
किमयशो ननु घोरमतः परम्?।
किमभवद्विपिने हरिणीदृशः
कथय नाथ! कथं बत मन्यसे?॥6॥
(उत्तररामचरितम्)

एतानि वाक्यानि पाठानन्तरमेव कर्मणि लोकोत्तरमानन्दं सहृदयानामातन्वतीति तेषां काव्यत्वम् । इति काव्य निरूपणं नाम प्रथमशिक्षा

अर्थः-

श्रीकान्तिचन्द्र भट्टाचार्य आचार्य दण्डी के काव्य लक्षण को स्वीकार करते हुए कहते हैं- इष्ट अर्थ से व्यवच्छिन्न पद-समूह को वाक्य कहते हैं। आगे इसकी व्याख्या करते हुए लिखते हैं- जो अलौकिक और चमत्कारी होने के कारण सहृदय के मन को आनन्दितकरनेवाला है, उस अर्थ से विशेषित पदसमूह (वाक्य) को काव्य कहते हैं। 'तेरा शत्रु मर गया' 'तेरे घर पुत्र उत्पन्न हुआ' इत्यादि वाक्यों से उत्पन्न आनन्द का लोकोत्तर अर्थात् अलौकिक न होने के कारण उसमें काव्यत्व की प्रतीति नहीं होती। इससे यह फलित होता है कि जो अलौकिक आनन्दजनक होने के कारण सहृदय पुरुषों के हृदय को आकृष्ट करने वाला वाक्य है वह काव्य है। आगे और स्पष्ट करते हैं- वह वाक्य काव्य है जो अद्भुत चमत्कारोत्पादक होने के कारण सामाजिक लोगों के मन को मानों जबर्दस्ती अपने ओर आकृष्ट करके अनुरञ्जित करता है। जैसे-

~~इस रूप की उत्पत्ति मानुषी स्त्रियों से~~
~~कैसे संभावित हो सकती है?~~

प्रभा से भरा हुआ तेज (चन्द्र, सूर्य आदि) भूतल से उदित नहीं होता ।। ~~क~~ ४ ।।
हिरनी ने कुश का ग्रास उगल दिया। मोरनी ने नाचना छोड़ दिया। लताओं से पीले (पके हुए) पत्ते झड़ रहे हैं। मानो वे आँसू बहा रही हैं।। ५ ।।
हे कठोर हृदय राम! तुम्हें यश प्रिय है। ऐसी प्रसिद्धि है। इससे निरपराध गर्भवती पत्नी के त्याग से अधिक घोर अपयश क्या होगा? जङ्गल में उस मृगनैनी का क्या बना। हे नाथ, कहो क्या सोचते हो?

इन ~~से वाक्य~~ (उपर्युक्त) तीनों पद्यों को पढ़ने से सहृदयों के हृदय में किसी अलौकिक आनन्द को उत्पन्न करते हैं, अतः इन्हें काव्य माना जाता है।

Scanned with CamScanner